Paper CC07 : Applied Theory

राग कोमल रिषभ आसावरी

परिचय

राग कोमल रिषभ आसावरी एक अत्यन्त प्रचलित व मधुर राग है। यह राग भैरव थाट के अन्तर्गत है। इसमें रिषभ, गांधार, धैवत और निषाद स्वर कोमल प्रयुक्त होते हैं। प्रस्तुत राग के आरोह में गांधार तथा निषाद वर्जित होने के कारण इसकी जाति औड़व–सम्पूर्ण मानी गयी हैं। इस राग का वादी स्वर धैवत तथा संवादी स्वर गांधार है। प्रस्तुत राग का गायन समय दिन का द्वितीय प्रहर है। इस राग की प्रकृति शान्त व गंभीर हैं।

राग कोमल रिषभ आसावरी का चलन आसावरी राग की तरह होता है। राग आसावरी में केवल शुद्ध रिषभ की जगह कोमल रिषभ का प्रयोग करने से राग कोमल रिषभ आसावरी की रचना हो जाती है। कहा जाता है कि आसावरी राग को और अधिक सौन्दर्यमंडित करने हेतु इसमें कोमल रिषभ का प्रयोग कर एक नये राग कोमल रिषभ आसावरी का जन्म हुआ।

इस राग को देखने से इसके स्वर भैरवी के प्रतीत होते हैं, किन्तु राग भैरवी और राग कोमल रिषभ आसावरी के चलन में बहुत अंतर हैं। जैसा कि हम पहले ही यह बता चुके हैं कि इस राग का चलन राग आसावरी के समान हैं। इसके आरोह में गांधार एवं निषाद वर्ज्य हैं और अवरोह में पंचम वक्र रूप से प्रयोग होता है। यथा –

आरोह : सा रे म प ध सां

अवरोह : सां रें नि ध म प, म ग रे सा

राग के आरोह में निषाद वर्जित होने के बावजूद अपवाद स्वरूप कुछ इस प्रकार प्रयोग किया जाता है – प ध नि ध, म प ग या रे म प नि ध म प। कहने का तात्पर्य यह है कि प ध नि ध या प नि ध – आसावरी के इस अंग से कोमल रिषभ आसावरी में पुनः लौटने के लिए धैवत के बाद मध्यम का प्रयोग कर पंचम पर न्यास करते हैं, तत्पश्चात् म ग रे सा– स्वर समूह से अवरोहात्मक क्रिया को पूर्ण करते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि राग के उत्तरांग भाग में आसावरी अंग अधिक स्पष्ट होता है। राग के पूर्वांग भाग में तोड़ी अंग झलकता हैं, यथा– सा रे ग, ग रे, ग रे सा। साधारनतः इस राग के अवरोह में षड़ज को प्रायः नहीं लगाते हैं, अर्थात् अवरोहात्मक स्वरूप कुछ प्रकार हैं – सां, रें नि धऽ, ध ऽ म म प ऽ।

प्रस्तुत राग का स्वरूप राग बिलासखानी तोड़ी से भी मिलता–जुलता हैं। दोनों रागों के स्वरूप में अंतर सिर्फ इतना है कि राग बिलासखानी तोड़ी के आरोह में मध्यम व निषाद वर्ज्य है जबकि राग कोमल रिषभ आसावरी के आरोह में गांधार व निषाद वर्ज्य हैं। इस राग को ''आसावरी तोड़ी'' के नाम से भी जाना जाता हैं।

राग कोमल रिषभ आसावरी वर्तमान समय में काफी प्रललित हैं। यह एक मींड प्रधान राग हैं। इस राग का गायन तीनों सप्तकों में समान रूप से होता है। पंचम राग का न्यास स्वर हैं तथा मध्यम को राग का अपन्यास स्वर माना जाता हैं।

स्वर–विस्तार :

- सा ऽ ऽ, ध़ ऽ ध़ ऽ सा ऽ, रे नि़ ध़ ऽ सा, रे नि़ ध़ ऽ म़ म़ प़ ऽ, म़ प़ ध़ ऽ सा, ध़ सा रे म ऽ ऽ, (म) ग रे सा ऽ, सा रे ऽ, रे म ऽ, म प ऽ ऽ, म प ध ऽ म प ऽ ऽ, म प (म) ग रे ऽ, ग रे, नि़ ध़ ऽ सा ऽ।
- सा रे म प ऽ, रे म प ऽ ऽ, म प ध ऽ ध ऽ, म म प ऽ ऽ, रे म प ऽ ऽ, ध ऽ म प, म प नि ध ऽ म म प, म प ध ऽ ध ऽ सां ऽ ऽ, ध सां रें नि ध ऽ ऽ सां ऽ, ध सां रें मं गं रें नि ध सां, रें नि ध ऽ म प ऽ ऽ, म प ध नि ध, म प ग रे सा ऽ, रे नि़ ध़ ऽ सा ऽ।